पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.11.2018 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री अनिल आर्य के

जन्मोत्सव पर संगीत संध्या

बुधवार, 14 नवम्बर 2018

सायं 5 से 7.30 बजे तक

आर्य समाज,अमर कालोनी,नई दिल्ली

आप सादर आमन्त्रित हैं

वर्ष-35 अंक-11 कार्तिक-2075 दयानन्दाब्द 194 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2018 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.11.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने सरदार पटेल जयन्ती पर "राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ" किया

हामिद अंसारी गैर जिम्मेदार वक्तव्य के लिये राष्ट्र से माफी मांगे

राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में सरदार पटेल का अविस्मरणीय योगदान –आर्य नेता अनिल आर्य

बुधवार, 31 अक्तुबर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में 143वीं "सरदार पटेल जयन्ती" के अवसर पर नई दिल्ली के "संसद मार्ग" पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में "राष्ट्रीय अखण्डता यज्ञ" का आयोजन कर स्वतन्त्र भारत के महान शिल्पीकार सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाजियों ने देश की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया और वह नारे लगा रहे थे "सरदार पटेल का अपमान नहीं सहेगा हिन्दुस्तान"

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भारत विभाजन के लिये सरदार पटेल नहीं अपितु जिन्ना जिम्मेदार थे, पूर्व राष्ट्रपति हामिद अंसारी का वक्तव्य गैर जिम्मेदाराना व शर्मनाक है कि भारत विभाजन के लिये पाकिस्तान जिम्मेदार नहीं है। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल आधुनिक भारत की एकता व अखण्ड भारत निर्माण के महान शिल्पीकार थे जिन्होंने 565 से अधिक रियासतों को इक्टठा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी राष्ट्र उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता। हाामिद अंसारी को गैर जिम्मेदारी पूर्ण भाषा बोलने के लिये पूरे राष्ट्र से माफी मांगनी चाहिये। देश के जिम्मेदार व्यक्तियों को भाषा की मर्यादा में रह कर ही बोलना चाहिये।

परिषद् के महामंत्री महेन्द्र भाई ने कहा कि जब यह स्पष्ट हो चुका है कि भारत में आंतकवादी गतिविधियों में व कश्मीर में अलगाववाद के पीछे पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद का हाथ है, अतः केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि अब पाकिस्तान को उसकी भाषा में कठोरता से जवाब दिया जाये और पाक अधिकृत कश्मीर वापिस लिया जाये। समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके संरक्षकों को सख्ती से कुचले, देश के आत्मसम्मान की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता।

वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने भारतीय सेना के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें पाकिस्तान को मुँह तोड़ जवाब देने के लिये बधाई दी। प्रदेश संचालक रामकुमार सिंह आर्य ने कहा कि देश विभाजन के लिये जिन्ना और नेहरू जिम्मेदार थे सरदार पटेल ने तो देश को जोड़ने का कार्य किया। आर्य नेता प्रवीन आर्य (गाजियाबाद) ने सरदार पटेल के महान व्यक्तित्व का परिचय नयी युवा पीढ़ी को करवाने के लिये पाठ्य पुस्तकों में उनकी जीवनी को विशेष स्थान देने की मांग की।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लौह पुरूष सरदार पटेल की ऐतिहासिक मूर्ति की स्थापना के लिये हार्दिक बधाई दी गई। आर्य नेता यशोवीर आर्य, प्रवीन आर्या, यज्ञवीर चौहान, देवेन्द्र गुप्ता, के.एल.राणा, देवेन्द्र भगत, अरूण आर्य, गौरव गुप्ता, सुदेश भगत, प्रकाशवीर शास्त्री, प्रमोद चौधरी, अनिल हाण्डा, स्वामी सौम्यानन्द जी, गौरव झा, ऋषिपाल खोखर, ममता चौहान, आदि ने भी अपने विचार रखे। प्रधानमन्त्री व गृहमंत्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

दिल्ली चलो आयो **केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में** दिल्ली आओ आर्य युवको

शिक्षाविद् डा. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

स्वामी आर्यवेश जी,स्वामी प्रणवानन्द जी,स्वामी धर्ममुनि जी,स्वामी श्रद्धानन्द जी के आशीर्वाद से

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 1,2 व 3 फरवरी 2019 (शुक,शनि व रविवार)

स्थानः पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली–110026

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं: बाहर से आने वाले आर्य जन शीघ्र सूचित करे

135वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस व दीपावली पर विशेष

भारत भाग्य विधाता ऋषि दयानन्द

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज ऋषि दयानन्द (1825–1883) का आंग्ल तिथि के अनुसार बलिदान दिवस वा पुण्य तिथि है। हिन्दी तिथि के अनुसार यह 7 नवम्बर, 2018 को है। ऋषि दयानन्द जी का बलिदान हुए पूरे 135 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस अवधि में उनके अनुयायियों एवं आर्यसमाज ने जो कार्य किये हैं उसमें अनेक सफलतायें हैं और कुछ क्षेत्रों में हम कमजोर भी रहे हैं जिनका निवारण वा समाधान हम नहीं कर पा रहे हैं। ऋषि दयानन्द को हम इसलिये भी स्मरण करते हैं कि उन्होंने हमें असत्य का परिचय कराकर सत्य ज्ञान, सत्य सिद्धान्त व मान्यताओं व जीवन को श्रेष्ठ व सफल बनाने वाले कर्तव्यों व अनुष्ठानों से परिचित कराया था। एक बार उनके समय के भारत की स्थिति पर विचार कर लेना उचित होगा। प्रथम बात यह है कि ऋषि दयानन्द के कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व देश घोर अविद्या व अन्धविश्वासों से ग्रस्त था। ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप से वह अपरिचित हो गया था। जब ईश्वर का सत्य स्वरूप ही लोगों को पता नहीं था तो सत्य उपासना भी वह नहीं जान सकते थे। देश भर में अविद्या पर आधारित मिथ्या परम्परायें प्रचलित थीं जिनसे हमारा देश व समाज दिन प्रतिदिन निर्बल व रूग्ण हो रहा था। महर्षि दयानन्द के समय में देश अंग्रेजों का गुलाम था। इससे पूर्व यह यवनों वा मुसलमानों का गुलाम रहा। सबने इसका शोषण किया और अमानवीय अत्याचार करने के साथ धर्मान्तरण किया। इस गुलामी का कारण भी अविद्या ही मुख्य था। इस गुलामी क कारण वैदिक धर्म व संस्कृति मिट रही थी और ईसाईयत का प्रचार व प्रसार हो रहा था।

इन विपरीत परिस्थितियों में देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने का दायित्व ऋषि दयानन्द ने अपने ऊपर लिया और प्रथम उपाय के रूप में वेद, धर्म और संस्कृति का प्रचार आरम्भ किया। वह असत्य व मिथ्या मत एवं उनकी मान्यताओं का खण्डन एवं विद्या की बातों, सत्य सिद्धान्तों एवं वैदिक मान्यताओं का मण्डन करते थे। हरिद्वार के कुम्भ के मेले में भी उन्होंने पाखण्डों का खण्डन किया था और हरिद्वार में पांखण्ड खण्डिनी पताका भी फहराई थी। पौराणिक नगरी काशी में जाकर उन्होंने वहां भी पाखण्ड एवं मूर्तिपूजा आदि मिथ्या अवैदिक मान्यताओं का खण्डन किया था। इससे मिथ्या मतों के आचार्यों में खलबली मच गई थी परन्तु सभी मिथ्या मतों के आचार्यों में इतनी योग्यता नहीं थी कि वह सत्य को स्वीकार करें अथवा ऋषि दयानन्द की मान्यताओं को असत्य व वेद विरुद्ध सिद्ध करें। इसका परिणाम सन् 16 नवम्बर, 1869 को मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ के रूप में सम्मुख आया। पौराणिक आचार्यों के रूप में लगभग 30 से अधिक काशी के शीर्ष आचार्यों ने अकेले स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ किया। यह सभी आचार्य मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि के समर्थन में वेद का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। स्वामी दयानन्द जी का प्रचार जारी रहा। वह देश के अनेक राज्यों व उनके नगरों में जाकर वेदों का प्रचार करने लगे। सर्वत्र लोग उनके शिष्य बनने लगे। शिष्यों में अधिक संख्या पठित, शिक्षित व ज्ञानी लोगों की हुआ करती थी। सन् 1875 के अप्रैल महीने की 10 तारीख को लोगों के आग्रह पर स्वामी दयानन्द जी ने मुम्बई नगरी के गिरिगांव मुहल्ले में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य वेद और वेदानुकूल सिद्धान्तों एवं मान्यताओं सहित वैदिक जीवन शैली का प्रचार तथा पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों सहित मिथ्या व अवैदिक सामाजिक परम्पराओं का उन्मूलन करना था।

स्वामी दयानन्द जी मनुष्यों के भोजन पर भी ध्यान देते थे। वह शुद्ध अन्न से बने शुद्ध भोजन को करने के ही समर्थक थे। मांसाहार, मदिरापान, अण्डे व मछली आदि का सेवन तथा धूम्रपान आदि को वह धर्म की दृष्टि से अनुचित तथा आत्मा को दूषित करने वाला मानते थे। देश को जातिवाद से मुक्त करने का भी स्वामी जी प्रयत्न किया। उन्होंने वैदिक काल में प्रचलित वैदिक वर्णव्यवस्था, जो गुण कर्म व स्वभाव पर आधारित थी, उसके सत्यस्वरूप को देश व समाज के सामने रक्षा। देश के पतन का मुख्य कारण अज्ञान व अन्धविश्वास ही थे। स्वामी जी ने अज्ञानता व अशिक्षा दूर करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया और उस पर विस्तार से चिन्तन प्रस्तुत किया। इसी का परिणाम कालान्तर में गुरुकुल एवं दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज व स्कूलों की स्थापना के रूप में सामने आया। भारत के शिक्षा जगत में यह एक प्रकार की क्रान्ति थी। हमारे पौराणिक भाई नारी शिक्षा का विरोध करते थे। ऋषि दयानन्द ने नारी शिक्षा की वकालत की और बताया कि विवाह गुण, कर्म व स्वभाव की समानता से होता है। अतः नारी का भी पुरुष के समान शिक्षित व विदुषी होना आवश्यक है। नारी यदि शिक्षित होगी तभी उसकी सन्तानें भी शिक्षित व संस्कारित हो सकेंगी। समाज ने ऋषि दयानन्द के इस विचार को अपनाया जिसका परिणाम हम आज देख रहे हैं कि शिक्षा जगत में नारियों की उपलब्धियां पुरुष वर्ग से अधिक देखने को मिलती है। स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार का जो कार्य किया वह एकांगी न होकर सर्वांगीण था। स्वामी दयानन्द नारी को संस्कारित कर वेद विदुषी बनाना चाहते थे। बहुत सी नारियां वेद विदुषी बनी और आज भी गुरुकुलों का संचालन कर रही हैं। इसके विपरीत पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के प्रभाव में विवेक के अभाव में बहुत सी नारियों ने भारतीयता की उपेक्षा कर पाश्चात्य नारी के स्वरूप को ग्रहण कर लिया जहां मनुष्य की भौतिक उन्नति तो कुछ–कुछ होती दिखाई देती हैं परन्तु आध्यात्मिक उन्नति प्रायः शून्य ही होती है जिसका परिणाम जन्म जन्मान्तरों में दुःख के सिवा कुछ होता नहीं है। यह भी बता दें कि स्वामी दयानन्द जी और उनके अनुयायियों वा आर्यसमाज ने जन्मना जातिवाद को समाप्त करने के क्षेत्र सहित दलितोद्धार का भी महान कार्य किया है।

अज्ञान व अन्धविश्वास सहित पाखण्डों का खण्डन करते हुए स्वामी दयानन्द जी ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जन्मना जातिवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अज्ञान व अविद्या के सभी कार्यों का खण्डन किया। स्वामी जी ने विद्या का प्रचार व प्रसार करने के लिये सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद–यजुर्वेद का संस्कृत–हिन्दी भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिससे देश में अविद्या का प्रसार कम होकर विद्या का प्रसार न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी हुआ। स्वामी दयानन्द जी ने अविद्या को दूर करने व सर्वत्र वैदिक मान्यताओं के अनुसार समाज व परिवार बनाने के लिये आर्यसमाज की स्थापनायें की। सर्वत्र साप्ताहिक सत्संग होने लगे जहां प्रातः यज्ञ–अग्निहोत्र, ईश्वर भक्ति के गीत व भजन तथा विद्वानों के ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का प्रचार, समाजोत्थान व देशोत्थान की प्रेरणा, मिथ्या मान्यताओं का खण्डन एवं सत्य सिद्धान्तों का मण्डन व प्रचार होता था। ऋषि दयानन्द ने पूरे विश्व को सर्वोत्तम व श्रेष्ठतम उपासना पद्धति भी दी है या यह कह सकते हैं कि वैदिक काल में योग की रीति से जो उपासना की जाती थी, उसका उन्होंने पुनरुद्धार किया। सन्ध्या में किन मन्त्रों से व किस विधि से उपासना की जाये, इस पर न केवल चारों वेदों के चुने हुए मन्त्रों से संकलित उपासना की विधि बताई अपितु अपने सभी ग्रन्थों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना पर व्यापक रूप से प्रकाश भी डाला।

आध्यात्मिक व सामाजिक जगत के उन्नयन व उत्कर्ष का ऐसा कोई कार्य व उपाय नहीं था जिसका उल्लेख स्वामी दयानन्द जी ने न किया हो व जिसको प्रचलित करने के लिए उन्होंने व उनके अनुयायियों ने कार्य न किया हो। स्वामी दयानन्द जी ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य प्राप्ति का उद्घोष अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया था। ऐसा अनुमान है कि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के ग्यारहवें समुल्लास में अंग्रेजों का तीव्र शब्दों में विरोध ही उनकी मृत्यु के षडयन्त्र का एक कारण बना था। इसकी विस्तार से चर्चा न कर हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वह सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास व ग्यारहवें समुल्लास सहित आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं व्यवहारभानु आदि सभी ग्रन्थों को पढ़े। हिन्दी को देश की व्यवहार व राजकाज की भाषा बनाने और गोवध बन्द करने के लिये भी ऋषि दयानन्द ने अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में अग्रणीय भूमिका निभाई थी। जिन दिनों ऋषि दयानन्द यह कार्य कर रहे थे तब गांधी जी बच्चे थे और अन्य बड़े राजनीतिक नेताओं का जन्म भी नहीं हुआ था। देश की आजादी के क्रान्तिकारी व अहिंसक आन्दोलनों में भाग लेने वालों में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक थी। अंग्रेज भी इस तथ्य से परिचित थे और इसी कारण उन्होंने पटियाला के आर्यसमाज व अन्यत्र भी आर्यसमाज के सदस्यों के उत्पीड़न के कार्य किये। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल आदि ऋषि दयानन्द के समर्पित अनुयायी थे। देश से स्त्री व पुरुषों की अशिक्षा को दूर कर शिक्षा का प्रचार व प्रसार करने में आर्यसमाज की अग्रणीय एवं प्रमुख भूमिका रही है। स्वधर्म एवं स्वसंस्कृति का बोध एवं प्रचार में भी आर्यसमाज का योगदान प्रमुख एवं सर्वाधिक है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां स्वामी दयानन्द ने अपना बौद्धिक योगदान न किया हो। स्वामी दयानन्द जी वस्तुतः विश्व गुरु थे। इसके साथ ही वह भारत के निर्माता और भाग्य विधाता भी सिद्ध होते हैं।

आज ऋषि दयानन्द जी के बलिदान दिवस व पुण्य तिथि पर हम उनकी महान आत्मा को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। आज देश के सामने अनेक चुनौतियां हैं। वर्तमान की विपरीत परिस्थितियों में आर्यसमाज विघटन व दुर्बलता से ग्रस्त है। हम आर्यसमाज के सभी नेताओं से निवेदन करते हैं कि वह पदैषणा का त्याग कर संगठन को मजबूत बनाने में अपना योगदान करें वरना इतिहास उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। ओ३म् शम्।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोन:09412985121

सरदार पटेल और हामिद अंसारी का ब्यान

– डॉ विवेक आर्य

हामिद अंसारी ने देश के बंटवारे को लेकर विवादित बयान दिया है। उन्होंने कहा कि देश के विभाजन के लिए सिर्फ पाकिस्तान ही जिम्मेदार नहीं था, बल्कि हिंदुस्तान भी जिम्मेदार था। अंसारी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के भारत की आजादी के चार दिन पहले 11 अगस्त 1947 को दिए भाषण के बारे में जिक्र करते हुए ये बात बताई। पहले भी अंसारी भारत में अल्पसंख्यक मुस्लमान सुरक्षित नहीं है जैसे मज़हबी बयान दे चुकें हैं।

सरदार पटेल के विषय में सत्य आप इस लेख के माध्यम से जान सकते हैं। सरदार पटेल के विषय में यह दुष्प्रचारित किया गया कि वे मुसलमान–विरोधी थे। किंतु वास्तविकता इसके विपरीत थी। सच्चाई यह थी कि हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ लाने के लिए सरदार पटेल ने हरसंभव प्रयास किए। इतिहास साक्षी है कि उन्होंने कई ऊँचे–ऊँचे पदों पर मुस्लमानों की नियुक्ति की थी। वह देश की अंतर्बाह्य सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे और इस संबंध में किसी तरह का जोखिम लेना उचित नहीं समझते थे।

यही कारण है कि जहां पटेल विभाजन से पहले मुस्लिम लीग और जिन्ना की मतान्ध नीतियों के घोर विरोधी थे वहीं विभाजन के पश्चात भारत में रह गए मुसलमानों से केवल वफ़ादारी का सबूत चाहते थे।

पटेल का कहना था–

मैं मुसलमानों से पूछता हूँ कि आप भारतीय इलाकों पर सीमावर्ती कबालियों की मदद के लिए पाकिस्तानी हमले की बगैर हिलाहवाली के निंदा क्यों नहीं करते?

क्या ये उनका दायित्व नहीं है कि भारत पर होने वाले हर हमले की निंदा करें?

हैदराबाद के विषय में भी सरदार पटेल की सम्मति जानने योग्य है। यह महसूस किया गया कि यदि सरदार पटेल को कश्मीर समस्या सुलझाने की अनुमति दी जाती तो जैसा कि उन्होंने स्वयं भी महसूस किया था, हैदराबाद की तरफ यह समस्या भी सोद्देश्यपूर्ण ढंग से सुलझ जाती। एक बार सरदार पटेल ने स्वयं एच.वी. कामत को बताया था कि ''यदि जवाहरलाल नेहरू और गोपालस्वामी आयंगर कश्मीरी मुद्दे को निजी हिफाजत में न रखते तथा इसे गृह मंत्रालय से अलग न करते तो मैं हैदराबाद की तरह इस मुद्दे को भी देश–हित में सुलझा देता।''

इसी प्रकार से, हैदराबाद के मामले में जवाहरलाल नेहरू सैनिक कारवाई के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने सरदार पटेल को यह परामर्श दिया–''इस प्रकार से मसले को सुलझाने में पूरा खतरा और अनिश्चितता है।'' वे चाहते थे कि हैदराबाद में की जानेवाली कारवाई को स्थगित कर दिया जाए। इससे राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय जटिलताएँ उत्पन्न हो सकती हैं। प्रख्यात कांग्रेसी नेता प्रो. एन.जी. रंगा की भी राय थी कि विलंब से की गई कारवाई के लिए नेहरू, मौलाना और माउंटबेटन जिम्मेदार हैं। रंगा लिखते हैं कि हैदराबाद के मामले में सरदार पटेल स्वयं महसूस करते थे कि पं. जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्री पद पर उनके दावे को निष्फल कर दिया था और इसमें मौलाना आजाद एवं लार्ड माउंटबेटन ने सहयोग दिया था। सरदार पटेल शीघ्र ही हैदराबाद के एकीकरण के पक्ष में थे, लेकिन जवाहरलाल नेहरू इससे सहमत हीं थे। लार्ड माउंटबेटन की कूटनीति से सरदार पटेल के विचार और प्रयासों को साकार रूप देने में विलम्ब हो गया।

सरदार पटेल के विरोधियों ने उन्हें मुसलिम वर्ग के विरोधी के रूप में वर्णित किया; लेकिन वास्तव में सरदार पटेल हिंदू–मुसलिम एकता के लिए संघर्षरत रहे। इस धारणा की पुष्टि उनके विचारों एवं कार्यों से होती है; यहां तक कि गांधी जी ने भी स्पष्ट किया था कि ''सरदार पटेल को मुसलिम–विरोधी बताना सत्य को झुठलाना है। यह बहुत बड़ी विडंबना है।'' वस्तुतः स्वतंत्रता–प्राप्ति के तत्काल बाद अलीगढ़ विश्वविद्यालय में दिए गए उनके व्याख्यान में हिंदू–मुसलिम प्रश्न पर उनके विचारों की पुष्टि होती है।

इसी प्रकार, निहित स्वार्थ के वशीभूत होकर लोगों ने नेहरू और पटेल के बीच विवाद को बढ़ा–चढ़ाकर प्रचारित किया है तथा जान–बूझकर पटेल और नेहरू के बीच परस्पर मान–सम्मान और स्नेह की उपेक्षा की। इन दोनों दिग्गज नेताओं के बीच एक–दूसरे के प्रति आदर और स्नेह के भाव उन पात्रों से झलकते हैं, जो उन्होंने गांधीजी की हत्या के बाद एक–दूसरे को लिखे थे। निस्संदेह, सरदार पटेल की कांग्रेस संगठन पर मजबूत पकड़ थी और नेहरूजी को वे आसानी से (वोटों से) पराजित कर सकते थे। लेकिन वे गांधीजी की इच्छा का सम्मान रखते हुए दूसरे नंबर पर कमान पाकर संतुष्ट थे। तथा उन्होंने राष्ट्र के कल्याण को सर्वोपरि स्थान दिया।

सरदार पटेल चीन के साथ मैत्री तथा 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' के विचार से सहमत नहीं थे। इस विचार के कारण गुमराह होकर नेहरू जी यह मानने लगे थे कि यदि भारत तिब्बत मुद्दे पर पीछे हट जाता है तो चीन और भारत के बीच स्थायी मैत्री स्थापित हो जाएगी। विदेश मंत्रालय ने तत्कालीन महासचिव श्री गिरिजाशंकर वाजपेयी भी सरदार पटेल के विचारों से सहमत थे। वे संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन के दावे का समर्थन करने के पक्ष में भी नहीं थे। उन्होंने चीन की तिब्बत नीति पर एक लंबा नोट लिखकर उसके दुष्परिणामों से नेहरू को आगाह किया था।

सरदार पटेल को आशंका थी कि भारत की मार्क्सवादी पार्टी की देश से बाहर साम्यवादियों तक पहुँच होगी, खासतौर से चीन तक, और अन्य साम्यवादी देशों से उन्हें हथियार एवं साहित्य आदि की आपूर्ति अवश्य होती होगी। वे चाहते थे कि सरकार द्वारा भारत के साम्यवादी दल तथा चीन के बारे में स्पष्ट नीति बनाई जाए।

इसी प्रकार, भारत की आर्थिक नीति के संबंध में सरदार पटेल के स्पष्ट विचार थे तथा कैबिनेट की बैठकों में उन्होंने नेहरूजी के समझ अपने विचार बार–बार रखे, लेकिन किसी–न–किसी कारणवश उनके विचारों पर अमल नहीं किया गया। उदाहरण के लिए, उनके विचार में उस समय समुचित योजना तैयार करके उदारीकरण की नीति अपनाई जानी चाहिए। आज सोवियत संघ पर आधरित नेहरूवादी आर्थिक नीतियों के स्थान पर जोर–शोर से उदारीकरण की नीति ही अपनाई जा रही है।

खेद की बात है कि सरदार पटेल को सही रूप में नहीं समझा गया। उनके ऐसे राजनीतिक विरोधियों के हम शुक्रगुजार हैं, जिन्होंने निरन्तर उनके विरुद्ध अभियान चलाया तथा तथ्यों को तोड़–मरोड़कर पेश किया, जिससे पटेल को अप्रत्यक्ष रूप से सम्मान मिला। समाजवादी नेहरू को अपना अग्रणी नेता मानते थे। इन लोगों ने पटेल को बदनाम किया तथा उनकी छवि पूँजीवाद के समर्थक के रूप में प्रस्तुत की। इन्होंने सरदार पटेल को क्रांतिकारी माना; लेकिन सौभाग्यवश सबसे पहले समाजवादियों ने ही यह महसूस किया था कि उन्होंने पटेल के बारे में गलत निर्णय लिया है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के चुनाव के पच्चीस वर्ष बाद चक्रवर्ती राज गोपालाचारी ने लिखा–''निस्संदेह बेहतर होता, यदि नेहरू को विदेश मंत्री तथा सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाया जाता। यदि पटेल कुछ दिन और जीवित रहते तो उन्हें यह पद मिल जाता, जिसके लिए संभवतः वे सही पात्र थे। तब भारत में कश्मीर, तिब्बत चीन और धार्मिक विवादों की कोई समस्या नहीं रहती।''

लेकिन निराशाजनक स्थिति यह रही कि सरदार पटेल के आदर्शों का बढ़–चढ़कर प्रचार करने वाले तथा उनके कार्यों की सराहना करने वाले भारतीय जनता पार्टी के अग्रणी नेताओं ने कांग्रेस से भी ज्यादा उनकी उपेक्षा की। ''सरदार पटेल सोसाइटी' के संस्थापक एवं यूनाइटेड नेशनल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष श्री एस. निजलिंगप्पा ने अपनी जीवनी 'माइ लाइफ ऐंड पॉलिटिक्स' (उनकी मृत्यु के कुछ माह पश्चात् प्रकाशित) में लिखा था–

''......आश्चर्य होता है कि पं. नेहरू से लेकर अब तक कांग्रेसी नेताओं को उनकी जीवनियाँ तथा संगृहीत चुनिंदा कार्यों को छपवाकर स्मरण किया जाता है। उनकी प्रतिमाएँ लगाई जाती हैं तथा उनके नामों पर बड़ी–बड़ी इमारतों के नाम रखे जाते हैं। लेकिन सरदार पटेल के नाम की स्मृति में पिछले 70 वर्षों में ऐसा कुछ नहीं किया गया था।

इस कमी को आज देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंदर मोदी जी ने सरदार की सबसे बड़ी प्रतिमा देश को समर्पित कर महान कार्य किया हैं।

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

1. सुश्री सरोजनी दत्ता (पूर्व मन्त्रिणी, स्त्री आर्य समाज, सैक्टर–7, रोहिणी) का निधन।
2. श्री रणजीतसिंह राणा (पूर्व प्रधान शिक्षक, आर्य वीर दल दिल्ली) का निधन।
3. श्री मदनलाल खुराना (पूर्व मुख्यमंत्री, दिल्ली) का निधन।
4. श्री बूटा राम (ससुर श्री दुर्गेश आर्य, दिल्ली) का निधन।
5. आचार्या निशा जी (कन्या गुरूकुल हसनपुर, पलवल) का निधन।
6. श्री रामदत शर्मा (नेताजी) नवीन शाहदरा, दिल्ली) का निधन।

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम,
आर्य युवक परिषद है उसका नाम

दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल व स्वास्थ्य मंत्री श्री सतेन्द्र जैन से भेंट

दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल व स्वास्थ्य मंत्री श्री सतेन्द्र जैन से भेंट की ओर दिल्ली हाट पीतमपुरा के महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस का निमन्त्रण दिया। प्रतिनिधि मण्डल में परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य के साथ महेन्द्र भाई,ओम सपरा,प्रवीन आर्या,सुरेश आर्य,अरूण आर्य,माधव सिंह हैं।

द्वारका में 11 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न व स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन

शुकवार, 19 अक्तुबर 2018, द्वारका वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली के तत्वाधान में आचार्य जीवनप्रकाश शास्त्री के नेतृत्व में सेन्ट्रल पार्क, सैक्टर–3 में 11 कुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। आचार्य ओमप्रकाश यजुर्वेदी ने यज्ञ करवाया। परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। श्री हंसराज,श्री रमेश योगाचार्य,श्री सुदर्शन तनेजा आदि उपस्थित थे। द्वितीय चित्र– सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से भेंट की व उनका अभिनन्दन किया गया तथा वार्षिक आर्य महासम्मेलन 2019 का निमन्त्रण दिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

रविवार, 28 अक्तुबर 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक मुख्यालय आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली में श्री अनिल आर्य की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुई। बैठक में 31 अक्तुबर को सरदार पटेल जयन्ती मनाने, महर्षि दयानन्द बलिदान दिवास 8 नवम्बर, राष्ट्रीय अध्यक्ष जन्मोत्सव 14 नवम्बर अमर कालोनी, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर 2018 एवम् वार्षिक 251 कुण्डीय यज्ञ व आर्य महासम्मेलन 1, 2, 3 फरवरी 2019 को मनाने व उसकी व्यापक तैयारी पर विचार किया गया। महामंत्री महेन्द्र भाई ने कुशल संचालन किया। चित्र में–आचार्य धनेश्वर बेहरा (प्रान्तीय अध्यक्ष, उड़ीसा व श्री सुरेश आर्य (गाजियाबाद) का अभिनन्दन भी किया गया।

कुरूक्षेत्र (हरियाणा) में राष्ट्रीय स्वर्णकार महासम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 21 अक्तुबर 2018,स्वर्णकार सेवा परिषद् के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्वर्णकार सम्मेलन श्री नामदेव धर्मशाला, कुरूक्षेत्र के सभागार में सोल्लास सम्पन्न हुआ। परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। स्वर्णकार सभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सौरभ आर्य ने कुशल संचालन किया। देश के विभिन्न प्रान्तों से प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

सीलिंग के विरूद्ध प्रदर्शन व गुरूकुल खेड़ाखुर्द में अन्धी व बीमार गऊओं की गौशाला

बुधवार, 31 अक्तुबर 2018, दिल्ली में हो रही सिलिंग के विरूद्ध नई दिल्ली के संसद मार्ग पर युनाईटेड हिन्दू फ्रन्ट के तत्वावधान में विरोध प्रदर्शन हुआ। श्री जयभगवान गोयल, श्री अनिल आर्य नेतृत्व करते हुए। द्वितीय चित्र–दिल्ली देहात के सुप्रसिद्ध गुरूकुल खेड़ाखुर्द में अन्धी व बीमार गऊओं के लिये नयी गौशाला का निर्माण कार्य चल रहा है। दानी महानुभाव दिल खोलकर सहयोग करें–सम्पर्कः मंत्री श्री मनोज मानः–9868174111

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970